REET 2025
LEVEL-1 & 2
वंदन बैच
हिंदी
Demo
03
भाषा शिक्षण की विधियाँ
Part 03
LIVE
28-12-2024 11:00 AM

REET 2025 L - 1&

REET पास

राजस्थान G.K

C.A

REET 2025
LEVEL-1 & 2
वंदन बैच
Features
Live Classes
Doubt Group
Class Notes PDF
Mock Test
Experienced Teachers
₹999/-
30% off
Coupon Code: REET30
₹699/-
Registration Starts from
23rd DEC
Classes Start from
26th DEC
JOIN US ON
DOWNLOAD THE
Google Play

कोर्स कैसे PURCHASE करें ?
ROJGAR With ANKIT
Hello, RWA
REET 2025 LEVEL-1 & 2
वंदन बैच
₹699/-
23rd DEC 26th DEC
Paid Classes
Free Courses
Free Weekly Tests
Test Series
PDF Class Notes
Books
My Courses
All Courses
RWA All Cou
999/-
View Details
View Demo
Buy Now
Price 999/-
Internet Handling Fees + ₹ 0.0
Total 999/-
Apply Coupon
Pay Online
REET30
Apply
Price 999/-
Discount ₹ 299/-
Total ₹ 700/-
30%

* सम्प्रेषण परक शिक्षण विधि ⇒ अपनी बात को दूसरे के सामने प्रभावी ढंग से बोलना तथा दूसरे की बात को समझना
ये प्रत्यक्ष विधि में भाषा सीखने से सम्बन्धित व्यावहारिक पक्ष पर बल दिया जाता है
सम्प्रेषण परक भाषा विधि ने भाषा शिक्षण को एक ऐसा आधार दिया है जिसमें भाषा के मौखिक रूप और उसकी सामाजिक सांस्कृतिक विशेषताओं को प्रमुखता प्रदान की गई।
* भाषा प्रयोग सीखने के अन्तर्गत ही भाषा की संरचना को सीखना समाहित रहता है

अनुकरण विधि-

नकल करके सीखना

➪ अनुकरण विधि में बालक अपने शिक्षक का अनुकरण कर लिखना, पढ़ना (उच्चारण करना) व नवीन रचना करना सीखता है। इस विधि में शिक्षक बालक को प्रारम्भ में अक्षर ज्ञान कराना प्रारम्भ करता है। वह निम्नलिखित प्रकार से बालक को अनुकरण द्वारा सिखाता है –

1 2 A B

अ) लिखित अनुकरण

लिखित अनुकरण निम्न प्रकार का होता है-

(1) रूपरेखा अनुकरण- रूपरेखा अनुकरण में शिक्षक हल्के हाथ से अभ्यास पुस्तिका पर अक्षरों की आकृति बना देता है अथवा मुद्रित पुस्तिकाएँ जिनमें अक्षर या वाक्य बिन्दु रूप में लिखे होते हैं, बालकों को देता है। बालक उन बिन्दुओं पर सधे हुए हाथ से पेन्सिल या बालपैन फेरते हैं और उन्हीं रेखाओं को पुष्ट बना देते हैं। यह बहुत पुरानी विधि है और बहुत से स्थानों पर अब भी प्रचलित है। इस विधि से अक्षर सीखने का अभ्यास करने के लिए विशेष प्रकार की अभ्यास-

पुस्तिकाएँ भी उपलब्ध होती हैं। बालक अभ्यास करते-करते अक्षरों या शब्दों को लिखना सीख जाता है।

(2) स्वतन्त्र अनुकरण - अध्यापक श्यामपट पर या अभ्यास पुस्तिका पर अक्षर लिख देता है और बालक से कहता है कि वह नीचे स्वयं उसी प्रकार के अक्षर लिखे। जैसे- क। बालक उन अक्षरों का अनुकरण करके अभ्यास कर लेते हैं। स्वतन्त्र अनुकरण के लिए भी अभ्यास- पुस्तिकाएँ उपलब्ध होती हैं।

(3) मॉण्टेसरी-विधि - इस विधि में आँख, कान आदि ज्ञानेन्द्रियों और हाथ - तीनों की सहायता ली जाती है। बालक पहले अक्षरों को देखता है, उनकी ध्वनियों

को कानों से सुनता है और उभरे हुए अक्षरों पर अँगुली फेरता है। वह अक्षरों के स्वरूप से परिचित होकर, उनको लिखना सीख जाता है।

(4) पैस्टालॉजी विधि - इस विधि में वर्णों की आकृति को खण्ड-खण्ड करके, उनका अभ्यास कराया जाता है जैसे- क लिखना हो तो पहले 0 फिर 1 फिर क् अंत में क

0 । क् क

(5) जैकटाट विधि - इस विधि को सबसे पहले जैकटाट नामक शिक्षाशास्त्री ने प्रयुक्त किया था। इस विधि में बालक स्वयं संशोधन करता है। बालक अध्यापक

परिवर्तन

का अनुकरण करके एक-एक शब्द को लिखता है और मूल से मिलाकर देखता जाता है।

राम विद्यालय जाता है। मूल

राम विद्यालय जाता है।

ब) उच्चारण अनुकरण

- इस पद्धति में अध्यापक एक-एक शब्द कहता जाता है और बालक उस शब्द की ध्वनि का अनुकरण करते चलते हैं। अनुकरण विधि उन भाषाओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है जहाँ पर एक अक्षर की एक से अधिक ध्वनियाँ होती हैं अथवा जहाँ पर लिखा कुछ जाता है और पढ़ा कुछ जाता है।

स) रचना अनुकरण विधि

- इस विधि में जिस प्रकार की भाषा और शैली में रचना करानी होती है, उसी भाषा और शैली पर आधारित रचना (गद्य, पद्य, नाटक आदि) को विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत कर दिया जाता है।

  - छात्र दिये हुए विषय पर उसी के अनुरूप रचना करने का प्रयास करते हैं; उदाहरणार्थ दीपावली का लेख बताकर होली पर लेख लिखाना।
  - यह विधि पूर्णतः मनोवैज्ञानिक नहीं है।

मातृभाषा

- इसमें छात्रों की भाषा तो अपनी होती है किन्तु शैली के लिए उन्हें आदर्श रचना पर ही निर्भर रहना पड़ता है।
- यह विधि उच्च कक्षाओं के लिए ही उपयुक्त हो सकती है।

इकाई विधि

- इकाई विधि अध्ययन तथा अध्यापन की वह विधि है जो विषय-वस्तु को छात्रों के सम्मुख इस प्रकार प्रस्तुत करती है कि वे सीखने में मानसिक एवं शारीरिक रूप से व्यस्त रहें और इस प्रकार ज्ञान प्राप्त करें कि प्राप्त ज्ञान के माध्यम से वे नयी परिस्थितियों के साथ समायोजन कर सकें।

- इकाई पद्धति विषय-वस्तु, शिक्षण-प्रविधियों तथा मुक्तियों के संगठन की वह पद्धति है जो पढ़ाने तथा सीखने को प्रभावोत्पादक बनाती है।
- सन् 1926 में डॉ. मोरीसन ने इकाई संगठन के लिये निम्नलिखित पाँच पदों का उल्लेख किया है

  - **पूर्व ज्ञान** इस पद में अध्यापक छात्रों के पूर्व - ज्ञान का पता लगाता है।
  - **प्रस्तुतीकरण** - यहाँ अध्यापक नवीन ज्ञान को छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करता है।

- **आत्मीकरण** - इसमें छात्र नये ज्ञान को आत्मसात करने हेतु अनेक क्रियाएँ करते हैं, जैसे पढ़ना, लिखना, बातचीत करना, वाद-विवाद करना, पूछना, तर्क करना, परामर्श करना आदि। इस पद में कक्षा की व्यवस्था अव्यवस्थित हो जाती है।
- **संगठन**- इस पद में अव्यस्थित कक्षा को पुनः एकत्र कर कक्षा के प्रत्येक 2 छात्र से उसके द्वारा अर्जित ज्ञान को तार्किक तथा बोधगम्य रूप में लिखने को कहा जाता है।
- **अभिव्यक्ति**- अन्त में अध्यापक छात्रों के अर्जित ज्ञान को विभिन्न प्रकारों से दुहराता है।